8. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

कवि परिचय –

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 21 फरवरी, 1896 की बसंत पंचमी के दिन मेदिनीपुर पश्चिम बंगाल में हुआ। तीन वर्ष की छोटी अवस्था में ही निराला जी की माताजी का निधन हो गया और युवावस्था तक आते–आते पिताजी का भी निधन हो गया। निराला का संपूर्ण जीवन संघर्षमय रहा। इलाहाबाद से निराला जी की कई स्मृतियाँ जुड़ी रहीं। निरालाजी का निधन 15 अक्टूबर, 1971 को हुआ।

छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक निराला हिंदी में मुक्तछंद के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। निराला के प्रमुख काव्य संग्रह इस प्रकार हैं – 'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका', 'तुलसीदास', 'अणिमा', 'बेला', 'नए पत्ते', 'अर्चना', 'आराधना', 'गीत कुंज' आदि। निराला का गद्य साहित्य भी काफी लोकप्रिय रहा है।

पाठ-परिचय –

प्रस्तुत काव्यांश निराला की 'राम की शक्तिपूजा' से संकलित है। इसमें अन्याय पर न्याय की, असत् पर सत् की, अधर्म पर धर्म की, रावणत्व पर राम की और अन्ततः निराशा पर आशा की विजय दिखला कर सांस्कृतिक प्रतिमानों को प्रस्तुत किया है। यह कविता मानव–मन के अन्तर्द्वन्द्वों की कथा है जो मानव-जीवन के अनवरत संघर्ष में विद्यमान जिजीविषा को व्यक्त करती है।

प्रस्तुत कविता में राम-रावण युद्ध सत् और असत् की दो विरोधी प्रवृत्तियों की टकराहट है। व्यक्ति को राम की तरह विपदा और संकटकालीन परिस्थितियों में अपने संगी-मित्रों से परामर्श लेकर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करना चाहिए।

सीता का अपहरण कर अट्टहास कर रहे रावण के साथ शक्ति को देख राम निराश हो जाते हैं किंतु विभीषण, जाम्बवान, हनुमान आदि मित्रों की सलाह पर शक्ति की उपासना करते हैं। राम का यह संघर्श विषमता और हताशा से त्रस्त मानवता को दानवता की शक्ति–संपन्नता के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष करने की प्रेरणा देता है।

पराजित होकर भी मानव को मन से हार स्वीकार नहीं करनी चाहिए, यही 'राम की शक्तिपूजा' का आशावादी संदेश है।

मूल पाठ

राम की शक्तिपूजा

है अमानिशा, उगलता गगन घन अन्धकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन–चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल,
भूधर ज्यों ध्यानमग्न, केवल जलती मशाल।

स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर फिर संशय,
रह रह उठता जग जीवन में रावणजय भय,
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपुदम्य श्रान्त,
एक भी, अयुत-लक्ष में रहा जो दुराक्रान्त,
कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार हार।

कुछ क्षण तक रहकर मौन सहज निज कोमल स्वर,
बोले रघुमणि ''मित्रवर, विजय होगी न, समर
यह नहीं रहा नर वानर का राक्षस से रण,
उतरी पा महाशक्ति रावण से आमन्त्रण,
अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति।'' कहते छल छल
हो गए नयन, कुछ बूँद पुनः ढलके दृगजल,
रुक गया कण्ठ, चमका लक्ष्मण तेजः प्रचण्ड
धँस गया धरा में कपि गह युगपद, मसक दण्ड
स्थिर जाम्बवान, समझते हुए ज्यों सकल भाव,
व्याकुल सुग्रीव, हुआ उर में ज्यों विषम घाव,
निश्चित सा करते हुए विभीषण कार्यक्रम
मौन में रहा यों स्पन्दित वातावरण विषम।
निज सहज रूप में संयत हो जानकीप्राण
बोले ''आया न समझ में यह दैवी विधान।
रावण, अधर्मरत भी, अपना, मैं हुआ अपर,
यह रहा, शक्ति का खेल समर, शंकर, शंकर!
करता मैं योजित बार-बार शरनिकर निशित,
हो सकती जिनसे यह संसृति संपूर्ण विजित,
जो तेजः पुंज, सृष्टि की रक्षा का विचार,
हैं जिनमें निहित पतन घातक संस्कृति अपार।

कह हुए भानुकुलभूषण वहाँ मौन क्षण भर,
बोले विश्वस्त कण्ठ से जाम्बवान, ''रघुवर,
विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण,

हे पुरुषसिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर।
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सकता त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त,
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!
तब तक लक्ष्मण हैं, महावाहिनी के नायक,
मध्य मार्ग में अंगद, दक्षिण-श्वेत सहायक।
मैं, भल्ल सैन्य, हैं वाम पार्श्व में हनुमान,
नल, नील और छोटे कपिगण, उनके प्रधान।
सुग्रीव, विभीषण, अन्य यूथपति यथासमय
आयेंगे रक्षा हेतु जहाँ भी होगा भय।''

यह अन्तिम जप, ध्यान में देखते चरण युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नीलकमल।
कुछ लगा न हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल,
ध्यान की भूमि से उतरे, खोले पलक विमल।
देखा, वहाँ रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय,
आसन छोड़ना असिद्धि, भर गए नयनद्वय,
''धिक् जीवन को जो पाता ही आया है विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका।
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय,
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय।

बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युतगति हतचेतन
राम में जगी स्मृति हुए सजग पा भाव प्रमन।
''यह है उपाय'', कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन

''कहती थीं माता, मुझको सदा राजीवनयन।
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।''
कहकर देखा तूणीर ब्रह्मशर रहा झलक,
ले लिया हस्त लक लक करता वह महाफलक।
ले अस्त्र वाम पर, दक्षिण कर दक्षिण लोचन
ले अर्पित करने को उद्यत हो गए सुमन
जिस क्षण बँध गया बेधने को दृग दृढ़ निश्चय,
काँपा ब्रह्माण्ड, हुआ देवी का त्वरित उदय।

''साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम!''
कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।
देखा राम ने, सामने श्री दुर्गा, भास्वर
वामपद असुर स्कन्ध पर, रहा दक्षिण हरि पर।
ज्योतिर्मय रूप, हस्त दश विविध अस्त्र सज्जित,
मन्द स्मित मुख, लख हुई विश्व की श्री लज्जित।
हैं दक्षिण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षिण गणेश, कार्तिक बायें रणरंग राग,
मस्तक पर शंकर! पदपद्मों पर श्रद्धाभर
श्री राघव हुए प्रणत मन्द स्वरवन्दन कर।

''होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।''
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।

•••

शब्दार्थ –

अमानिशा – अमावस की रात/ अप्रतिहत – अपराजित, जिसे रोका न जा सके/ अम्बुधि–सागर, समुद्र/ राघवेन्द्र – राम/ दृगजल – आँसू/ मौलिक – नवीन/ वाम – बाँया/ धिक् – धिक्कार/ पुरश्चरण – किसी कार्य की सिद्धि के लिए मंत्र जाप, विशिष्ट सफलता हेतु आयोजन/ वदन – मुख।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. राम ने किस को पराजित करने के लिए शक्ति की उपासना की ?

(क) रावण (ब) मारीच

(ग) कंस (घ) मेघनाद ( )

2. 'अनामिका' किसकी रचना है ?

(क) सूर्यकांत त्रिपाठी (ख) पंत

(ग) दिनकर (घ) महादेवी वर्मा ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. रावण से युद्ध करते हुए राम निराश क्यों हो गए थे ?
2. राम-रावण युद्ध किसका प्रतीक है ?
3. राम को शक्ति उपासना करने का सुझाव किसने दिया ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'राम की शक्तिपूजा' के आधार पर राम-रावण की सेना का वर्णन कीजिए।
2. राम ने शक्ति की उपासना में कौन–से फूलों का प्रयोग किया ?
3. रावण से युद्धरत राम स्वयं को क्यों धिक्कारते हैं ?
4. पाठ में श्रीराम के लिए किन-किन पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग हुआ है ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 'राम की शक्तिपूजा' में निहित सांस्कृतिक प्रतिमानों को समझाइए।
2. 'राम की शक्तिपूजा' मानव-मन का अन्तर्द्वन्द्व है। समझाइए।
3. वर्तमान भौतिकता की चकाचौंध में 'राम की शक्तिपूजा' साधारण आदमी की पीड़ा को अभिव्यक्त करती है। स्पष्ट कीजिए।
4. 'राम की शक्तिपूजा' में सत् और असत् प्रवृत्तियों के संघर्ष को विस्तार से समझाइए।
5. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) स्थिर राघवेन्द्र को हिला .....उद्यत हो हार हार।

(ख) ''धिक जीवन को जो .....मायावरण प्राप्त कर जय।

•••